**धरती की मिठास**

माँ धरती की माटी में
अंतर्मन की मिठास है,
मानव के कण कण में
इस माटी की सौगात है,
जल और वायु पृथ्वी पर
साँसों को सींचते रहते है,
सूर्य किरण की ऊर्जा से
खेतों में फसल उगाते हैं,
पाकर अनाज फसलों से
इंसान की भूख मिटाते हैं,
जन्म देने वाली जननी को
सदा नमन सब करते हैं,
फिर धरती माँ के आँचल मे
जीवन की खुशियां पाते है,
मेहनत से सेवा करने वाले
जीवन मे आगे बढ़ जाते हैं,
छोटा बड़ा हर इंसान यहाँ
जब तक शीश झुकायेगा,
मनुष्य वही इस धरती पर
आशीर्वाद सभी से पायेगा,
जब से माँ धरती प्रकट हुई
धर्म अपना निभाती रहती है,
हर मौसम में अनुशासन से
जीना सबको सिखलाती है,
भोर से लेकर संध्या तक
निसंकोच प्रकृति चलती है,
बिना किसी भेद भाव के
हर जीव को सब कुछ देती है,
दुनिया की इस नाट्य शाला में
सूत्रधार का अभिनय करती है,
है माँ, धरती माता नमन तुम्हे
हर मानव की पालन हारा हो,
जीवन की राह दिखाने वाली
गंगा सी निर्मल जल धारा हो,

✍ गोपाल कृष्ण व्यास